FROM THE EDITOR'S DESK

We are happy to present the second anniversary issue of our bilingual half yearly magazine *संवेदना* to our readers. At the outset, we thank all the authors who have contributed to this issue despite being surrounded by an environment of hopelessness, despair and disappointment due to COVID 19. None of us has ever witnessed such struggle for survival. Covid-19 is at the back of everyone's mind. Yet, we are resilient and we all are hard at work with a hope that everything will be fine one day. Our authors have defied this onslaught and have given their precious time to allow us to bring this issue for our readers that covers a wide variety of subjects.

As in the earlier issues this issue also has an English and Hindi section, news analysis and sketches based on the previous issue. We continue to make the magazine more colourful and have added some additional sketches and pictures to make the presentation more attractive.

***संवेदना* covers a variety of social issues. We not only address important contemporary issues but also strive to bring out characters from the folds of history to enlighten our readers on our glorious heritage. All articles are written in simple language which one can read without picking up the dictionary. In other words, there is no target audience for us- anyone who picks up the magazine can read it with interest page one through the end.**

Here is now a brief overview of English section of the current issue:

The article on '*Phool Walon Ki Sair*' talks about the week-long celebration by the florists from different religious backgrounds. This article highlights its interesting historical background dating in the Mughal period in the early century and its significance in terms of the communal harmony in the contemporary India.

***'Checks and Balances'* addresses the need for the working couples to balance their roles remembering the fall outs of making their jobs their priority. On a similar theme, Dilemmas and Challenges of a Working Woman reminds the society the pulls and pressures on a working woman and to acknowledge and be considerate.**

***'Me, Myself and I'* highlights the self-centric attitude becoming a norm amongst the young adults in the competitive world of today whereby everything a person does is for personal gains. As editors we do not pass any judgements, the solution offered by the author is to practice our well-founded ideologies and to become role models for this generation.**

***'Do You Know Real You'* reveals how significant it is to be familiar with your own self and to have the appropriate balance of psyche and sentiments, thereby unveiling the concept of introspection. At the end of the day, you can misrepresent yourself to someone else but you cannot escape from knowing who you truly are.**

The article on domesticated animals and pets discusses some interesting role pets play in human society and discusses many aspects of their general care, nutrition, health care, preventive care, insurance and laws and regulations on pets in the US and in India.

The research paper on obstetric violence, a study based on primary data concludes that women face a variety of mental and physical abuses during childbirth irrespective of their financial status.

The article on *Rudrama Devi*, a ruler for almost four decades of Kakatiya Dynasty of Andhra which is present day Telangana region, a great warrior and administrator, makes an interesting read from history.

In her article, the author has made a case for paternity leave as a step towards gender equality, discusses attitudes of young fathers, and provisions for paternity leave in different countries.

संवेदना के हिन्दी भाग में सन्निहित लेखों में पहला लेख 'स्पर्श : जीवन से मुक्त होने की तरफ ले जाती उम्र की एक अवस्था' है। इसमें उम्र के विभिन्न पड़ावों से गुजरते हुए वृद्धावस्था तक पहुँचना एवं इस अवस्था में परिजनों के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों को बड़ी ही मार्मिकता से उपस्थापित किया गया है। लेखिका ने इस लेख के माध्यम से यह बताने का स्तुत्यपूर्ण प्रयास किया है कि शैशव, किशोर, युवा एवं वृद्धावस्था यह शरीर के सामान्य धर्म हैं। इसके कारण आपसी प्रेम एवं सौहार्द्र में कमी नहीं आनी चाहिए। वस्तुतः वृद्धावस्था में परिवार की ज्यादा जरूरत होती है। अतः सभी का उत्तरदायित्व बनता है कि हम अपने बड़े-बुजुर्गों का यथोचित मान-सम्मान करें एवं उनके अपार ज्ञान का दोहन करें।

'तोल मोल के बोल' लेख में प्रासंगिक उद्धरणों के द्वारा यह सुस्पष्ट किया गया है कि 'बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछिताय'। लेख में अभिव्यक्त एक अतीव सुन्दर उक्ति है, 'जीवन सौन्दर्य है, जिसका शृंगार शब्द है'। इसके द्वारा यह सन्देश दिया गया है कि बोलने से पहले जो कुछ बोल रहे हैं, उसका भली-भाँति चिन्तन-मनन कर लें। तत्पश्चात् ही अपने विचारों को रखें। ऐसा करने वाले जन अनुकरणीय होते हैं, जबकि जो बिना सोचे-समझे कुछ भी बोल देते हैं, उनकी बातों की कोई भी परवाह नहीं करता है।

जीवन संघर्ष का ही अपरनाम है। कभी-कभी स्थितियाँ अनुकूल नहीं होती हैं। जीवन में कई बार असफलता भी प्राप्त होती है। किन्तु यह असफलता ही एक दिन बड़ी सफलता का आधार बनती है। अतएव मनुष्य को परिस्थितिजन्य असफलताओं से विचलित होकर निराशा एवं हताशा में डूबना नहीं चाहिए, अपितु पुनः और अधिक उत्साह से परिश्रम करके सफलता को अंगीकार करने हेतु उद्यत होना चाहिए। यही वह मुख्य बात है, जिसे 'संघर्ष जीवन का हिस्सा है' में बड़े ही संक्षिप्त किन्तु गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया गया है। लेखिका की यह पंक्ति अत्यन्त प्रेरणास्पद है कि 'कोई भी मंजिल मनुष्य के जीवन के संघर्षों का ही हिस्सा होती है, वो उसकी पूरी जिन्दगी नहीं होती'।

'कोरोना काल के संकट की चुनौतियाँ और सीख' के लेखक ने कोरोना काल की समस्याओं, जटिलताओं एवं आने वाले समय में इससे उत्पन्न कठिन परिस्थियों की ओर सबका ध्यानाकर्षित किया है। निःसन्देह मनुष्य को हमेशा मानवता के साथ खड़ा होना चाहिए। प्राकृतिक आपदाओं से जन्य कठिन समय की चुनौतियों से अवश्य ही पार पाया जा सकता है, किन्तु इसके लिए हमें सभी भेद-भावों को मिटाकर परस्पर एकजुट होकर इन चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

युवा शक्ति का सम्यक् सदुपयोग समाज एवं देश को एक महत्त्वपूर्ण आयाम दे सकता है। इसके लिए उसके विभिन्न गुणों एवं शक्तियों का समुचित सन्निवेश परमावश्यक है। एतदर्थ युवाओं को जागरूक करना जरूरी है। युवा-जागरूकता को प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न उपागमों की चर्चा की गई है - 'युवाओं में श्रद्धा, विश्वास और जागरूकता' नामक लेख में। युवाओं में अपार शक्तियाँ निहित हैं, यह बात लेखिका ने सहर्ष स्वीकार करते हुए यह बताने की चेष्टा की है कि इस पर यथोचित नियन्त्रण एवं इसका समुचित सदुपयोग भी जरूरी है।

'जैनेन्द्र और सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में स्त्री-विमर्श' लेख में स्त्री-विमर्श-सम्बन्धी जैनेन्द्र एवं सुभद्रा कुमारी के दृष्टिकोण को रखा गया है। प्रस्तुत लेख में लेखिका ने स्पष्ट किया है कि दोनों ही पुरोधा लेखकों की रचनाओं में स्त्री पात्र को प्रमुख स्थान दिया गया है। स्त्री की दशा को दिखाकर समाज को उनके प्रति जागरूक किया गया है। किन्तु जैनेन्द्र की रचनाओं में स्त्री-विमर्श जहाँ सहानुभूति की दृष्टि से उपस्थापित है, तो वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान का स्त्री-विमर्श स्वानुभूति का विषय है। जैनेन्द्र की स्त्री पात्र प्रतिकार न करते हुए केवल सम्पूर्ण समर्पण के सिद्धान्त का ही सम्मान करती है, जबकि सुभद्रा कुमारी चौहान विवेचित स्त्री पात्र समर्पण करते हुए भी आवश्यकतानुसार प्रतिशोध भी करती है। जैनेन्द्र जहाँ स्त्री-मुक्ति एवं उनके उत्थान हेतु गांधीवादी समाधान ही प्रस्तुत करते हैं, वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं पर गांधी का प्रभाव होते हुए भी आवश्यकता पड़ने पर यथोचित प्रतिकार के सिद्धान्त को भी अंगीकार किया गया है। स्त्रीविमर्श एवं स्त्री-मुक्ति सम्बन्धी उक्तद्वय लेखकों के नजरिए का तुलनात्मक विवेचन ही प्रस्तुत लेख का प्रमुख प्रतिपाद्य है।

'भारतीय समाज के आइने में बदलती नारी की छवि' लेख में वैदिक काल से लेकर अद्यावधिपर्यन्त समाज में स्त्रियों को लेकर आए दृष्टिकोण को उपस्थापित किया गया है। लेख में इस तथ्य को प्रमुखता से रेखांकित किया गया है कि वैदिक काल से लेकर रामायण, महाभारत अर्थात् महाकाव्य काल तक स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ रही, किन्तु कालान्तर में पुरुष प्रधान समाज ने स्त्रियों को चूल्हा-चौका एवं घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया। उनकी स्वतन्त्रता एवं स्वायत्तता समाप्त सी हो गई। किन्तु आधुनिक काल की नारी ने न केवल अपने अस्तित्व हेतु आवाज बुलन्द की, अपितु यह सिद्ध भी किया कि वह समाज के लिए पुरुषों की तरह ही अतीव उपयोगी है। वे भी राष्ट्र की तरक्की में महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकती हैं। लेख में एक पंक्ति मिलती है - ''आधुनिक नारी प्राचीन अंधविश्वासों की बेड़ियों से मुक्त हो गई है। वह भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को अधिक महत्व देती है''। यह पंक्ति वस्तुतः स्त्री-स्वावलम्बन की स्वीकारोक्ति है। लेखिका का यह मानना भी अतीव प्रशंसनीय है कि 'आधुनिकता की आड़ में कुछ नारियाँ स्वतंत्रता और स्वावलंबन के साथ-साथ अभिमान को अपना लेती हैं और नारीत्व को लज्जित कर बैठती हैं'। अतः स्वतन्त्रता एवं स्वावलम्बन में उच्छृंखलता के लिए स्थान नहीं होना चाहिए।

'बालिका शिक्षा : चिंतन अनुचिंतन' लेख में स्त्री-शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित किया गया है। स्त्री ही परिवार का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार होती है। एक शिक्षित स्त्री अवश्य ही एक सुसभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण करते हुए एक समृद्ध राष्ट्र-निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत लेख में लेखिका ने स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी प्रमुख विचारकों के मत को रखकर स्त्री-शिक्षा के विभिन्न आयामों पर बड़ी ही सरलता एवं सहजता के साथ विचार किया है।

We hope that our readers will enjoy reading the thought provoking articles in this issue. Any comments or feedback from readers are always welcome.

Editors - Samvedana